डॉ॰ विष्णु 'विराट' से डॉ॰ महेश 'दिवाकर' की बातचीत

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आपका जन्म कब और कहाँ हुआ? शिक्षा कहाँ पाई? अर्थोपार्जन हेतु क्या व्यवस्था थी?

डॉ॰ विष्णु विराट– मेरा जन्म 1 जुलाई 1946 को श्री कृष्ण की पावन जन्म भूमि मथुरा में हुआ।

प्राईमरी शिक्षा नगर पालिका के श्री गणेश स्कूल, जवाहर स्कूल आदि में प्राप्त की। हाई स्कूल मथुरा के ही बी॰एन॰ पोद्दार हाई स्कूल से किया। इन्टर की परीक्षा चम्पा अग्रवाल इन्टर कालेज, मथुरा से तथा बी॰ए॰ एवं एम॰ए॰ की परीक्षाएं किशोरी रमण कालेज, मथुरा से उत्तीर्ण की जो आगरा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहा है।

सन् 1970 में गुजरात के बड़ौदा नगर में परिस्थितियाँ ले आईं, यहाँ से मध्यकालीन भक्ति साहित्य पर पी–एच॰डी॰ सम्पन्न की, यहीं से बी॰एड॰, साहित्याचार्य एवं वेदांताचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। बड़ौदा विश्वविद्यालय में हम सन् 1985 में शोध अधिकारी तथा 1991 में प्रवक्ता एवं 1995 में रीडर पद पर नियुक्ति हुई। सन् 2005 में हिन्दी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष पद पर नियुक्ति हुई। सन् 2008 में ही प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति हुई।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आपकी सर्जन यात्रा कब और कहाँ से आरम्भ हुई और कैसे अग्रसर हुई? प्रेरणा स्रोत क्या रहे?

डॉ॰ विष्णु विराट– मैंने बाल्यकाल से साहित्यिक वातावरण का अनुभव किया है। घर में दादी के द्वारा अष्टछाप के कवियों के कीर्तन, पितामह द्वारा श्रीमद् भागवत के कथा प्रसंग, पिता जी द्वारा ब्रजभाषा काव्य पाठ के आयोजन तथा आस–पास आयोजित काव्य गोष्ठियों के सरस आकर्षण लगे ही रहते थे। हाई स्कूल तक आते–आते मैं ब्रजभाषा में छंद रचनाएं करने लगा था। उस समय ब्रज भाषा के अनेक सिद्ध और आचार्य कवि वर्तमान थे, जिनमें गोकुल के देवी द्विज, मथुरा के गोविन्द जी, कैलाश कृष्ण, दीनानाथ सुमनेश, रामलला, बाबा बालमुकुंद, भगवान दत्त जी, यमुना दत्त प्रतिम जैसे प्रसिद्ध कवि भाग लेते थे। इनमें कुछ खड़ी बोली के भी समर्थ कवि रहते थे जिनमें राजेश दीक्षित, आगरा के सोम ठाकुर, महेंद्र निशेष, महेंद्र चतुर्वेदी, प्रीतमदत्त चच्चन, मानू मोहन उपेंद्र, महेंद्र नेह, सव्यसांची आदि उपस्थित रहते थे। इन्हीं कवियों से मैं प्रारम्भ में अनुप्रेरित रहा हूँ।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आपने हिन्दी तथा ब्रजभाषा में ही काव्य रचनाएं की हैं, क्यों?

डॉ॰ विष्णु विराट–प्रारम्भ में मैंने ब्रजभाषा में ही काव्य रचनाएं की, मैं शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। ब्रजभाषा के वरिष्ठ कवियों के साथ आकाश वाणी–मथुरा–वृन्दादन में जाने लगा, दिल्ली के ब्रजमाधुरी कार्यक्रम में भी बुलाया जाने लगा। मेरी प्रारम्भिक ब्रजभाषा कृति 'फैली पलाश के कानन लौं' बहुत लोकप्रिय हुई, जिसमें परम्परित सवैया छंद में कृष्ण की ललित लीलाओं का वर्णन समादिष्ट है। तब तक वहाँ आस–पास स्थानीय कवि सम्मेलन भी आयोजित होते थे, जिनमें ब्रज और खड़ी बोली की रचनाएं पढ़ी जाती थीं। मैंने तब खड़ी बोली हिन्दी में भी काव्य सर्जना प्रारम्भ कर दी थी और आस पास के कवि सम्मेलनों में नवोदित कवि के रूप में आने जाने लगा था।

मेरी प्रथम हिन्दी कविता लखनऊ से निकलने वाली तथा श्री नारायण चतुर्वेदी भैया जी के सम्पादकत्व में प्रकाशित 'सरस्वती' में मुद्रित हुई थी, तब मैं अत्यधिक गौरवान्वित हुआ था। मेरी ब्रज भाषा छंद रचनाएँ बहुत जल्दी प्रसिद्ध हो गईं, लोग मुझसे बार–बार ब्रजभाषा कविता की ही फरमाईश करते थे।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– हिन्दी के किन–किन साहित्यकारों का प्रभाव आप पर पड़ा है? आपके प्रिय कवि कौन–कौन हैं?

डॉ॰ विष्णु विराट– ब्रजभाषा काव्य सर्जना के संदर्भ में मैं डॉ॰ जगदीश गुप्त से अत्यधिक प्रभावित रहा, उनकी ब्रजकृति 'छंद शती' ने मुझे बहुत अनुप्रेरित किया। हिन्दी काव्य सर्जकों में श्री देवेन्द्र शर्मा इन्द्र, कुमार रवीन्द्र, माहेश्वर तिवारी, वीरेन्द्र मिश्र, सोमठाकुर, किशन सरोज तथा शिव ओम अम्बर मुझे सतत प्रभावित करते रहे हैं। यही मेरे प्रिय कवि रहे हैं। प्राचीन वरिष्ठ कवियों में निराला तथा दिनकर से मैं अनुप्रेरित रहा हूँ।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आपके काव्य की मूल संवेदना क्या है?

डॉ॰ विष्णु विराट– परिवर्तित सोच के आयाम, मानवीय मूल्यों के प्रस्तार, भारतीय संस्कृति के विस्तृत आयाम तथा राष्ट्रीय संचेतना

के स्वर। उत्तरवादी सद्भावना के स्वर में मैं कहता हूँ–

जो भी देखे हैं सच–कडुवा बयान कर देते।
जुबां मैं एक बुरी लत के सिवा कुछ भी नहीं।
तुम्हारे पास में नूरे जहां है, जन्नत है।
हमारे पास मोहब्बत के सिवा कुछ भी नहीं।

भारतीय आध्यात्मिक संचेतना के रागात्मक स्वर इस प्रकार सृजित हैं–

चन्द्रमा चांदनी से करता है जिसका अभिषेक।
'नेति' कहकर के मौन हो जाते वैदिक अभिलेख।
वो मेरे सामने वंशी बजा रहा है 'विराट'
ले मेरी आँख, उसे मेरी निगाहों से देख।।

इसी प्रकार गीत–दर्पन पर यह मुक्तक देखिए–

लो धनुष देता हूँ, रथ देता हूँ।
इति नहीं देता हूँ अथ देता हूँ।
गीत का दर्प नहीं दे सकता
तुमको संघर्ष का पथ देता हूँ।।

गहनता संवेदनाओं के पटल पर अंकित ये पंक्तियाँ ध्यातव्य हैं–

हमने ये सोच के पानी में बहाये थे चराग
डूबने वाला अंधेरे में न रहने पाये।।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आपको नहीं लगता कि आज का साहित्यकार अहंवादी और प्रदर्शन प्रिय हो गया है। उसका समूचा व्यक्तित्व आरोपित मूल्यों पर आधारित है।

डॉ॰ विष्णु विराट– ऐसा है भी और नहीं भी। बहुत से ऐसे वरिष्ठ कवि हैं जिनके पास एक समृद्ध साहित्य भंडार है। रचनाओं का विपुल संग्रह है। उनकी अपनी एक अलग हटकर उच्चस्थ पहचान भी है। किन्तु उनमें अहं का स्पर्श तक नहीं। एकदम सहज और सरल, जैसे देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र', कुमार रवीन्द्र। किन्तु आरोपित मिथ्यावादी आडम्बरी तथा कथित नामों की भी लम्बी तालिका है, जो कुछ न होकर भी शीर्षस्थ चर्चाओं में आरोपित रहते हैं। ऐसे बहुत लोगों को आप जानते हैं।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– आप एक स्थापित नवगीतकार हैं। क्या कारण है कि अभिज्ञात साहित्य परिवार में जो प्रतिष्ठा नई कविता या सामयिक कविता को प्राप्त है, वह नवगीत को नहीं है।

डॉ॰ विष्णु विराट– हम लोग जो नवगीतकार हैं, वे नई कविता की सिरे से खोज नहीं करते। अछान्दस होने से वह निरस्त नहीं हो जाती। उसके करम में अर्थ विस्फोट जैसी स्थिति है, किन्तु मिट्टी की गंध नहीं, जनाग्रही सहज जीवन की झाँकियों का अभाव है। लोक रंजन से कोसों दूर है। उसमें है तो वैश्विक बाजार वाद का विश्लेषण है। उपभोक्तावादी सतही सोच के छद्म प्रकाशन हैं। आम–आदमी से बहुत दूर रहकर आम आदमी की चर्चा करना अनर्गल है। नवगीत का दुर्भाग्य यह है कि उसे समर्थ समीक्षकों को संवाद के लिए उच्चमंच नहीं मिले। परिमाण में भले ही वह भारतीय सांस्कृतिक परिसीमाओं के निबंधन में संकुचित कही जाती रही है किन्तु उसमें आयोजित सोच के आरोपित प्रस्तार नहीं हैं। जमीन की बात जमीन पर पड़े रहकर की जाती है। गगन चाटी संभाषणों में नवगीत की कोई रूचि नहीं है।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– काव्य रचना की भाषा के विषय में आपके क्या विचार हैं?

डॉ॰ विष्णु विराट– भाषा प्रसंग और संदर्भ से जुड़ी होनी चाहिए, विषय की जमीन और सोच का आसमान भाषा से तय होना चाहिए। मेरा अपना विचार है कि भाषा का आडम्बर कविता का प्रथम शत्रु है। सहज और सरल भाषा में भी आप गहनतम

वैचारिक तथ्यों को उदघाटित कर सकते हैं। मेरा खण्डकाव्य 'तमसा के तट' इसी तथ्य को सामने रखता है। मैंने 'निर्वसना' खण्डकाव्य में भी भाषा के औचित्य को बनाए रखा है। मेरा एक प्रसिद्ध शेर है–

मैं तुम्हें कैसे मकानों की मरम्मत सोंपूँ
तुम तो दीवाल पै चढ़ते दरारों की तरह।।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– अपनी प्रकाशित साहित्यिक रचनाओं के विषय में कुछ कहें।

डॉ॰ विष्णु विराट– मेरी अब तक 75 पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें ब्रजभाषा काव्य कृतियाँ, नवगीत संग्रह, मंचीय कविताएं, समालोचनाएं, समीक्षाएं, व्यंग्यलेख संग्रह, अनुदित रचनाएँ तथा शोध प्रबंधादि सम्मिलित हैं। विशेष चर्चित रचनाओं में ब्रजभाषा काव्य संग्रह हैं–जैसे 'फैली पलाश के कानन लौं, विराट सतसई, मोहि बीन के तारन में कसि लै, छंदराग आदि। नवगीत कृतियों में हाथ से छूटे कबूतर, लौट आई लाल परियाँ, समय साक्ष्य है, चीड़वन में एक चिड़िया, अक्षरों के वंश घायल हैं, आदि। खण्डकाव्य अथवा लम्बी कविताओं में तमसा के तट, निर्वसना, एक रण वैचारिकी है शेष, सीता स्वप्न, दिनकर और दशानन, पितृ ऋण आदि। व्यंग्य कथा संग्रह में 'लीला पीर हरण की'।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– एक सर्जक के नाते राष्ट्र के प्रति आपका क्या दायित्व है। आपके साहित्य में इसकी क्या भूमिका रही है?

डॉ॰ विष्णु विराट– कवि का साहित्य सृष्टा का यह मानवीय और नैतिक दायित्व है कि वह सत्य को उजागर करे तथा भ्रष्टाचरणों की भर्त्सना करे, समाज का अहित करने वाले तथा राष्ट्र के प्रति द्रोह एवं गद्दारी करने वाले तत्वों के चेहरे उजागर करे।

मैंने मंचीय कविताओं में राष्ट्रीय ओज के स्वर को बल दिया है। मेरे नवगीतों में भी शोषण तथा दमन के विरोध का स्वर अपने पूर्ण आक्रोश के साथ व्यक्त हुआ है।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– अच्छे रचनाकार के बारे में आपका क्या अभिमत है?

डॉ॰ विष्णु विराट– अच्छे रचनाकार की पहचान है कि वह अपने विरल व्यक्तिव की छाप कविता में अंकित करे, समय से ताल मिलाकर चले, विचार–पटल के विस्तृत बनाए रखे, संवेदना के स्वरों में रागात्मकता सन्निहित रखे तथा कथ्य में सम्प्रेषण बनाए रखे। तभी वह अपनी विधा में कुछ देर तक ठहर सकता है, रसिक सुधीजन समीक्षकों की दृष्टि में आ सकता है। लोग उसे पढ़ना और समझना चाहेंगे और घर से बाहर भी वह चर्चा विमर्श का विषय बन सकेगा।

डॉ॰ महेश 'दिवाकर'– ब्रजभाषा में आपने खूब लिखा हैं। फैली पलाश के कानन लौं। मोहि बीन के ताख में कसि लै। छंद राग आदि। आपको नहीं लगता कि यह वीतराग का स्वर अब मूलप्राय है या वही परम्परित पुरातन लीला विलास के भक्ति और श्रृंगार के स्वर बहुत मिट पिट, चुके हैं। आज के समय में चलन से दूर हो चुके हैं।

डॉ॰ विष्णु विराट– मैंने डॉ॰ जगदीश गुप्त की 'छंद शती' पढ़ी तो गुप्त जी से मैंने संवाद भी स्थापित किया, और मैं उनके इस विचार से पूर्ण सहमत हुआ कि साहित्य का सौंदर्यवादी अभिमन साहित्य के राग, रंग और सम्मोहन को बनाने में बहुत समर्थ है। कृष्ण का लीला विलास कल था, आज भी है और कल भी रहेगा। एक आधुनिका फैशन परस्त अल्पावरणावृता महिला है जो आज की तारीख में नव नूतन मूल्यों को जी रही है किन्तु एक सुंदर गृहस्थ सोलह श्रृंगार किये सलज्ज नारी भी है, उसका भी अपना आकर्षण है। इसी तरह ब्रजभाषा के काव्य सौंदर्य की रागात्मक महत्ता को नकारा नहीं जा सकता। हाँ, इतना अवश्य है कि ब्रजभाषा में काव्य रचना एक चुनौतीपूर्ण अभियान है, क्योंकि पुरावर्ती महान कवियों ने इतनी वैविध्य पूर्ण वाक्य सर्जना की है कि उसमें अपना मौलिक अवदान अंकित करना बहुत ही साहसी कृत्य माना जाएगा।

डा0 महेश 'दिवाकर'– अंत में पूछना चाहूँगा कि सही अर्थो में कविता की क्या परिभाषा है? इन तमाम काव्य विधाओं में आप सही किसे मानते हैं।

डॉ॰ विष्णु विराट–यह चर्चा प्रकारान्तर से की जा चुकी है। मैं यहाँ पुनः निवेदन करना चाहूँगा कि वैश्विक पटल पर विकसित देशों का लोक मानस भौतिक उपलब्धियों को अतिरेक से अपना कर शिकार हो चुका है। वह दिशाहीन होकर कुछ भी निश्चित नहीं कर पा रहा है। जबकि विकास शील देशों का मानस अपनी जिजीविषा के लिए संघर्ष रत है। वह आज भी रोटी–कपड़ा की लड़ाई से मुक्त नहीं हो पाया है। वैश्विक स्तर पर यह वैचारिक अन्तराल सर्वत्र आभासित है। फिर भी यदि प्रबुद्ध लोग छद्मजीवी बनकर अपने आपको अभिजात्य वर्ग में जोड़ने की निरर्थक कल्पना करके अंधानुकरण की वृति

का शिकार होते हैं, तो इसमें उनकी अपनी कमजोर सोच का आडम्बर ही है। हम अपना वजूद और कद भी जानते हैं और अपना आकाश तथा अपनी धरती भी देखकर बाते करतें हैं। नवगीत की रागात्मक सोच में और नई कविता में यही अंतराल है किन्तु छद्म जीवी तथाकथित इसे हमारी कमजोरी और अक्षमता से जोड़कर अपनी वरिष्ठता आरोपित करते हैं तो करें–

कबिरा खड़ा बजार में सबकी मांगे खैर।
ना काहू सौं दोस्ती, न काहू सौं बैर।।

सम्पर्क–
– डॉ॰ विष्णु 'विराट', (पी–एच॰डी॰)
409, ब्रजवाटिका, सिद्धनाथ रोड, बडौदरा
(गुजरात) भारत

–डॉ0 महेश दिवाकर
सरस्वती भवन, मिलन विहार
मुरादबाद (उ.प्र.)
मो.–09927383777